



# बिहार गजट

## असाधारण अंक

### बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित

---

17 ज्येष्ठ 1941 (श०)  
(सं० पटना 677) पटना, शुक्रवार, 7 जून 2019

---

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

अधिसूचना  
2 मई 2019

सं० 5 नि०गो०वि०(5) 99/2018-128/नि०गो०—डा० संदीप कुमार गुप्ता, भ्रमणशील पशु चिकित्सा पदाधिकारी, नवीनगर (औरंगाबाद) द्वारा पत्रांक—शून्य दिनांक 05.08.2009 के माध्यम से दिनांक 06.08.2009 से दिनांक 10.08.2009 तक आकस्मिक अवकाश के लिए जिला पशुपालन पदाधिकारी, औरंगाबाद को आवेदन भेजा गया। जिला पशुपालन पदाधिकारी, औरंगाबाद के पत्रांक 708 दिनांक 18.08.2009 द्वारा डा० गुप्ता का अवकाश संबंधी आवेदन अस्वीकृत करते हुए मुख्यालय नहीं छोड़ने एवं कर्तव्य पर बने रहने का आदेश दिया गया था। इसके बावजूद डा० गुप्ता अपने कर्तव्य से अनुपस्थित रहें। जिला पशुपालन पदाधिकारी, औरंगाबाद के पत्रांक 316 दिनांक 11.03.2010 द्वारा विभाग को प्राप्त सूचना के आधार पर कर्तव्य के प्रति लापरवाही, अनुपस्थित एवं अनुशासनहीनता के लिए विभागीय पत्रांक 197 नि०गो० दिनांक 13.05.2010 द्वारा डा० गुप्ता से स्पष्टीकरण की गयी। उनसे प्राप्त स्पष्टीकरण की समीक्षा अनुशासनिक प्राधिकार द्वारा की गयी तथा समीक्षोपरांत डा० गुप्ता के स्पष्टीकरण को अस्वीकृत करते हुए अनधिकृत अनुपस्थिति अनुशासनहीनता एवं उच्चाधिकारियों के आदेश की अवहेलना के लिए विभागीय आदेश 238 नि०गो० दिनांक 27.07.2012 द्वारा डा० गुप्ता को निलंबित किया गया।

दिनांक 06.08.2009 से लगातार पाँच वर्षों से अधिक अवधि तक अनधिकृत रूप से अपने कर्तव्य से अनुपस्थित रहने के आरोप के लिए विभागीय संकल्प संख्या 28 नि०गो० दिनांक 03.02.2017 द्वारा डा० गुप्ता के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही संचालित की गयी। विभागीय कार्यवाही के फलाफल के विरुद्ध जाँच पदाधिकारी द्वारा जाँच प्रतिवेदन समर्पित किया गया था। जाँच प्रतिवेदन की समीक्षा अनुशासनिक प्राधिकार द्वारा की गयी। समीक्षोपरान्त जाँच पदाधिकारी द्वारा समर्पित जाँच प्रतिवेदन के कुछ बिन्दु पर अनुशासनिक प्राधिकार द्वारा असहमति दर्शायी गयी जो निम्नवत है :-

विभागीय कार्यवाही का जाँच प्रतिवेदन समर्पित किये जाने के क्रम में जाँच पदाधिकारी द्वारा डा० संदीप कुमार गुप्ता के उस कथन पर विचार नहीं किया गया है, जिसमें उन्होंने औरंगाबाद पदस्थापन से अनुपस्थित होने के कारणों का विस्तार से उल्लेख किया गया था जबकि उन कारणों का पूर्ण विश्लेषण अपेक्षित है।

अनुशासनिक प्राधिकार द्वारा इंगित उक्त असहमति के बिन्दु पर पुनः जाँच कर जाँच प्रतिवेदन समर्पित करने हेतु विभागीय पत्रांक 100 नि०गो०, दिनांक 18.04.2018 द्वारा जाँच पदाधिकारी से अनुरोध किया गया।

उसी आलोक में जाँच पदाधिकारी द्वारा पुनः प्रथम जाँच प्रतिवेदन के असहमति के बिन्दु पर जाँच कर जाँच प्रतिवेदन समर्पित किया गया है।

जाँच पदाधिकारी द्वारा अपने जाँच प्रतिवेदन में यह मंतव्य दिया गया है कि आरोपित पदाधिकारी द्वारा अपने लिखित अभिकथन दिनांक 15.06.2018 में विभागीय सेवा से अपनी अनुपस्थिति के कारणों के रूप में किसी नये तथ्य का उल्लेख नहीं किया गया है और न ही कोई नया साक्ष्य समर्पित किया गया है। आरोपित पदाधिकारी द्वारा विभागीय सेवा में अपनी अनुपस्थिति के लिए पूर्व में भी इन्हीं तथ्यों/कारणों का उल्लेख किया गया था।

आरोपित पदाधिकारी डा० संदीप कुमार गुप्ता द्वारा समर्पित बचाव हेतु लिखित अभिकथनों में अंकित तथ्य कि अराजक तत्व के लोगों द्वारा बिहार छोड़कर अपने गृह राज्य उत्तर प्रदेश चले जाने की धमकी देने के कारण एवं उनकी पत्नी एवं पुत्री को क्षति पहुँचाये जाने के भय के कारण उनके द्वारा अवकाश पर प्रस्थान किया गया, स्वीकार योग्य नहीं है। विभागीय कार्यवाही संचालन के क्रम में आरोपित पदाधिकारी द्वारा अपने जिला पशुपालन पदाधिकारी या अन्य उच्चाधिकारियों अथवा संबंधित जिला पदाधिकारी/पुलिस अधीक्षक को इस संबंध में शिकायत करने अथवा सूचित करने अथवा संबंधित थाने में एफ०आई०आर० इत्यादि दर्ज किये जाने संबंधी कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया जा सका। इस प्रकार डा० गुप्ता पर गठित अनधिकृत अनुपस्थिति का आरोप प्रमाणित होता है।

डा० गुप्ता के विरुद्ध गठित आरोप, जाँच पदाधिकारी के मंतव्य एवं आरोपी पदाधिकारी के बचाव बयान के आधार पर सम्पूर्ण मामले की समीक्षा अनुशासनिक प्राधिकार द्वारा किया गया तथा समीक्षोपरांत पाया गया कि डा० गुप्ता को औरंगाबाद पदस्थापन के दौरान कुछ असमाजिक तत्वों द्वारा तबाह करने तथा औरंगाबाद नहीं छोड़ने की स्थिति में उनके परिवार को जान से मारने की धमकी दी गयी, जिसके कारण डा० गुप्ता अपने परिवार के साथ बिहार छोड़कर अपने गृह जिला कानपुर (उ० प्र०) चले गये और अब तक कार्यालय से अनुपस्थित रहे हैं। इस संबंध में डा० गुप्ता को चाहिए था कि संबंधित थाना में एफ०आई०आर० करवाते, विभाग के वरीय पदाधिकारी को सूचना देते परन्तु डा० गुप्ता द्वारा ऐसा कुछ भी नहीं किया गया, परन्तु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि जब किसी व्यक्ति के परिवार, बाल बच्चों को जान से मारने की धमकी मिलती है, तो मनोवैज्ञानिक रूप से वह इतना डर जाता है कि पुलिस को सूचना देने के बजाय सबसे पहले वह जान की सुरक्षा का इंतजाम करने लगता है। घटना स्थल से दूर जाकर रहने का प्रयास करता है, ताकि धमकी देने वाले की नजरों से दूर रह सके। डा० गुप्ता के साथ भी यही घटना घटित हुई है। हो सकता है कि परिवार एवं बाल बच्चों को जान से मारने की धमकी से वह इतना डर गया हो कि पुलिस/थाना को सूचित किए बिना वह बिहार से बाहर अपने गृह जिला कानपुर चले गये हो। यह भी संभावना हो सकती है कि कानपुर जाने के पश्चात परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा भी डा० गुप्ता पर परिवार को जान की सुरक्षा का हवाला देकर उन्हें अपने कर्तव्य स्थल औरंगाबाद जाने से मना कर दिया गया हो। इस प्रकार डा० गुप्ता कार्यालय से अनधिकृत रूप से अनुपस्थित जान बूझकर नहीं रहे हैं, बल्कि परिस्थितिजन्य कारणों से अनुपस्थित रहे हैं।

डा० गुप्ता के द्वारा डर के कारण कार्यालय से अनुपस्थिति की पुष्टि उनके अभ्यावेदन दिनांक 07.05.2010 में अंकित तथ्यों से भी होती है, जिसमें डा० गुप्ता ने असामाजिक तत्वों द्वारा जान से मारने की धमकी के आलोक में कार्यालय छोड़कर अपने गृह जिला कानपुर जाने कि सूचना के साथ-साथ यह बात अंकित की है कि विभाग से उनका स्थानांतरण अन्यत्र कहीं कर दिया जाये और ऐसा न होने कि स्थिति में उनके उक्त आवेदन को ही त्याग-पत्र मान लिया जाए। इससे स्पष्ट होता है कि कोई भी व्यक्ति सिर्फ परिवार का जान बचाने के लिए ही नौकरी को दांव पर लगा सकता है। ऐसे भी डा० गुप्ता के विरुद्ध कोई अपराधिक मामला या वित्तीय गबन का मामला नहीं है। अज्ञात लोगों के द्वारा डा० गुप्ता एवं उनके परिवार को धमकी दिये जाने के कारण वे अपनी सुरक्षा हेतु कर्तव्य से अनुपस्थित रहे हैं। वे अब विभाग में कार्य भी करना चाहते हैं विभाग में पशु चिकित्सा

पदाधिकारी के बहुत से पद रिक्त भी हैं। अतः डा० गुप्ता के साथ उत्पन्न परिस्थिति के आलोक में मानवीय आधार पर विचार करते हुए राज्य सरकार द्वारा लिए गये निर्णय के आलोक में

- (i) डा० संदीप कुमार गुप्ता, तदेन् भ्रमणशील चिकित्सा पदाधिकारी, नवीनगर, औरंगाबाद को तत्काल प्रभाव से निलंबन से मुक्त किया जाता है।
- (ii) निलंबन अवधि में डा० गुप्ता को सिर्फ जीवन निर्वाह भत्ता देय होगा, परन्तु यह अवधि सेवा अवधि मानी जायेगी।
- (iii) इस अनधिकृत अनुपस्थिति के लिए डा० गुप्ता की तीन वेतन वृद्धि संचयात्मक प्रभाव से रोकी जाती है।
- (iv) दिनांक 06.08.2009 से निलंबन की तिथि 27.07.2012 तक की अवधि का कार्य नहीं तो वेतन नहीं के सिद्धांत के आलोक में डा० गुप्ता को कोई वेतन देय नहीं होगा।
- (v) निलंबन मुक्ति के पश्चात् पदस्थापन की प्रतीक्षा में डा० गुप्ता पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, (मुख्यालय) में योगदान समर्पित करेंगे।

विश्वासभाजन,  
मधुरानी ठाकुर,  
सरकार के संयुक्त सचिव।

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय,  
बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।  
बिहार गजट (असाधारण) 677-571+100 डी0टी0पी0।  
Website: <http://egazette.bih.nic.in>